''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

JAYOTI VIDYAPEETH WOMEN'S UNIVERSITY, JAIPUR

(Format for Preparing E Notes)

Faculty of FEM

Faculty Name- **JV'n GIRIJA SHARMA (Assistant Professor)**

Program- III Semester B.A B.ED

Course Name - HINDI LANGUAGE

Session No. & Name – 1.8 Arguments for हिन्दी गद्य की विधाएँ

Academic Day starts with –

Greeting with saying **'Namaste'** by joining Hands together following by 2-3 Minutes Happy session, Celebrating birthday of any student of respective class and **National Anthem**.

Lecture Starts with-

Review of previous Session Arguments for -Against HINDI LANGUAGE

Topic to be discussed today- Today We will discuss about Arguments for **हिन्दी गद्य की विधाएँ**

Introduction & Brief Discussion About The Topic

हिन्दी गद्य की विधाएँ

हिन्दी के गद्य साहित्य की विधाओं को दो वर्गों में बाँटा जाता है।

1. एक वर्ग **"प्रमुख"** विधाओं का है। इनमें **'नाटक', 'एकांकी', 'उपन्यास', 'कहानी', 'निबंध'** और **'आलोचना'** को रखा जाता है।

प्रमुख विधाएँ

1. नाटक 2. एकांकी 3. उपन्यास 4. कहानी 5. निबंध 6. आलोचना

2. दूसरा वर्ग **"गौण या प्रकीर्ण"** विधाओं का है। इनके अन्तर्गत **'जीवनी', 'आत्मकथा', 'यात्रावृत्त', 'पत्र-साहित्य', 'संस्मरण', 'रेखाचित्र', 'रिपोर्ताज', 'गद्य-काव्य', 'डायरी', 'भेंटवार्ता'** आदि का उल्लेख किया जा सकता है।

गौण या प्रकीर्ण विधाएँ

1. जीवनी 2. आत्मकथा 3. यात्रा वृत्त 4. संस्मरण 5. रेखा चित्र 6. गद्य-काव्य 7. रिपोर्ताज 8. डायरी 9. भेंट वार्ता 10. पत्र-साहित्य

प्रमुख विधाओं में 'नाटक', 'उपन्यास', 'कहानी', 'निबंध' तथा 'आलोचना' का आरम्भ तो **भारतेन्दु युग** में हुआ। **द्विवेदी युग** में 'जीवनी', 'यात्रा वृत्त', 'संस्मरण' और 'पत्र साहित्य' का आरंभ हुआ। 'गद्य काव्य', 'संस्मरण', और 'रेखा-चित्र' की विधा **छायावाद युग** में विशेष समृद्ध हुई। 'आत्मकथा', 'रिपोर्ताज', 'भेंट वार्ता', 'डायरी', 'व्यंग्य लेखन', 'एकालाप' आदि अनेक विधाएँ **छायावादोत्तर युग** में विकसित एवं समृद्ध हुई। बीसवीं शताब्दी के इस नौवें दशक में इन नई विधाओं में प्रचुर गद्य साहित्य प्रकाशन हुआ है जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हो रहा है।

नाटक- जो रचना श्रवण द्वारा ही नहीं अपितु दृष्टि द्वारा भी दर्शकों के हृदय में रसानुभूति कराती है उसे नाटक या दृश्य-काव्य कहते हैं। **अभिनय के माध्यम से समाज एवं व्यक्ति के चरित्रों का प्रदर्शन ही 'नाटक' कहलाता है।** यह दृश्य काव्य के अंतर्गत आता है जो रंगमंच का विषय है। इसका उद्देश्य शिक्षण और मनोरंजन के साथ-साथ मानवीय संवेदना, समस्या एवं समाज के यथार्थ का चित्रण करना है।

नाटक **"नट"** शब्द से निर्मित है जिसका आशय हैं- **सात्त्विक भावों का अभिनय**।

नाटक दृश्य काव्य के अंतर्गत आता है । इसका प्रदर्शन रंगमंच पर होता हैं। भारतेंदु हरिशचन्द्र ने नाटक के लक्षण देते हुए लिखा है-- "नाटक शब्द का अर्थ नट लोगों की क्रिया हैं। दृश्य-काव्य की संज्ञा-रूपक है। रूपकों मे नाटक ही सबसे मुख्य है इससे रूपक मात्र को नाटक कहते है।

आज के इस लेख मे हम नाटक का विकास क्रम, नाटक की परिभाषा और नाटक के तत्वों को जानेंगे। हिन्दी मे नाटक लिखने का प्रारंभ पद्म के द्वारा हुआ लेकिन आज के नाटकों मे गद्य की प्रमुखता है। नाटक गद्य का वह कथात्मक रूप है, जिसे अभिनय संगीत, नृत्य, संवाद आदि के माध्यम से रंगमंच पर अभिनीत किया जा सकता है।

नाटक की परिभाषा

भारतेंदु हरिशचन्द्र के अनुसार, — "नाटक शब्द का अर्थ नट लोगों की क्रिया हैं। दृश्य-काव्य की संज्ञा-रूपक हैं। रूपकों में नाटक ही सबसे मुख्य है इससे रूपक मात्र को नाटक कहते हैं।"

भरतमुनि के अनुसार, — 1. "संपूर्ण संसार के भावों का अनुकीर्तन ही नाट्य हैं।" २.अभिनय की दृष्टि से संवादों एवं द्रश्यों पर आधारित विभिन्न पात्रों द्धारा रंगमंच पर प्रस्तुत करने के लिए लिखी गई साहित्यिक रचना 'नाटक' कहलाती हैं।

बाबू गुलाबराय के अनुसार " नाटक मे जीवन की अनुकृति को शब्दगत संकेतों मे संकुचित करके उसको सजीव पात्रों द्वारा एक चलते-फिरते सप्राण रूप में अंकित किया जाता है।

नाटक मे फैले हुए जीवन व्यापार को ऐसी व्यवस्था के साथ रखते है कि अधिक से अधिक प्रभाव उत्पन्न हो सके। नाटक का प्रमुख उपादान है उसकी रंगमंचीयता।

हिन्दी साहित्य मे नाटकों का विकास वास्तव मे आधुनिक काल मे भारतेंदु युग मे हुआ। भारतेंदु युग से पूर्व भी कुछ नाटक पौराणिक, राजनैतिक, सामाजिक, आदि विषयों को लेकर रचे गए। सत्रहवीं-अठारहवीं शताब्दी मे रचे गए नाटको मे मुख्य है-- ह्रदयरामकृत- हनुमन्नाटक, बनारसीदास- समयसार आदि।